मधुमक्खियों का विचित्र प्रजनन

मधुमक्खियों में काफी सख्त श्रम विभाजन होता है। इनमें एक रानी मधुमक्खी होती है जिसकी संतान ही रानी बन सकती है। जो मज़दूर मधुमक्खियां होती हैं, वे संतान तो पैदा कर सकती हैं मगर ये सारी संतानें नर होती हैं। मगर मधुमक्खियों की एक किस्म (*एपिस मेलिफेरा केपेन्सिस*) में हाल में हुए एक अध्ययन में देखा गया है कि मज़दूर मधुमक्खियां भी रानी को जन्म दे सकती हैं। मगर वे अंडे तभी देती हैं जब रानी की मृत्यु हो जाए।

सिडनी विश्वविद्यालय की मेडलीन बीकमैन और बेन ओल्डरॉयड ने इस अध्ययन के दौरान *ए. मेलिफेरा केपेन्सिस* के 8 छत्तों में से रानी को हटा दिया। जैसे ही रानी को हटाया गया, मज़दूर मधुमक्खियों ने अंडे देने शुरू कर दिए। बीकमैन और ओल्डरॉयड ने पूर्व रानी द्वारा दिए गए अंडों को वापिस उसी छत्ते में रख दिया। अंडों की देखभाल मज़दूर मधुमक्खियां करती हैं और इस देखभाल से तय होता है कि किस अंडे में से रानी पैदा होगी।

प्रयोग के दौरान देखा गया कि मज़दूर मधुमक्खियों ने स्पष्ट रूप से भेदभाव किया और अपने अंडों से निकली इल्लियों की बेहतर देखभाल की, उन्हें ज़्यादा भोजन दिया, बनिस्बत रानी के अंडों से निकली इल्लियों के।

मॉलीक्यूलर इकॉलॉजी में प्रकाश्य इस शोध पत्र से संकेत मिलता है कि मधुमक्खियों में परवरिश में सहयोग जिनेटिक समानता के आधार पर होता है। जो इल्ली जिनेटिक रूप से ज़्यादा निकट है उसे बेहतर परवरिश दी जाती है। यह भी देखा गया है कि मधुमक्खी की इस किस्म में मज़दूर रानी को हटाने का काम काफी जल्दी-जल्दी करते हैं। वास्तव में यह पूरे छत्ते की सेहत के लिए भी अच्छा होता है और मधुमक्खी पालकों के लिए भी। ***(स्रोत फीचर्स)***